फिर भी मैं प्रयास करूँगा की अपने विद्यार्थियों के तरफ से स्वयं ही प्रश्न उठाऊँ और उसका उत्तर देने का प्रयत्न करूँ।

तो प्रिय विद्यार्थियों, विषय से संबंधित जो पहला प्रश्न हमारे दिमाग में आता है, वह यह है कि हमें आधुनिक भारतीय इतिहास या औपनिवेशिक भारतीय इतिहास का अध्ययन क्यों करना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर देने के क्रम में मैं व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा ~~कही गयी बात~~ मजाकिए लहजे में कही गई इस बात को उद्धृत करना चाहूँगा कि "अतीत वर्तमान का हेडमास्टर होता है और वर्तमान अतीत का कुली।" अर्थात वर्तमान समय में जो कुछ भी घटित होता है, वह कईएक मामलों में अतीत में घटित घटनाओं से निर्देशित होता रहता है। और फिर वही बात कि वर्तमान अतीत के बहुतेरे चीजों को ढो रहा होता है। ऐसे में स्पष्ट है कि अतीत का अध्ययन किये बगैर हम वर्तमान के मुकम्मल समझदारी का दावा नहीं कर सकते हैं। हम वर्तमान भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, कानून, नौकरशाही, शिक्षा आदि को तबतक ठीक - ~~ठीक~~ नहीं समझ सकते हैं, जबतक कि औपनिवेशिक भारत के दौरान इन्हीं पक्षों से ~~से रही~~ संबंधित घटित हो रही घटनाओं और प्रवृतियों का अध्ययन न कर लें।

देशव्यापी लाक्ड-डाउन के दौरान छात्र-छात्राओं के लिए तैयार की जा रही पाठ्य सामग्री।

पवन कुमार
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
आर॰ एन॰ कॉलेज, हाजीपुर,
BRABU, मुजफ्फरपुर, बिहार।

यह पाठ्य सामग्री हमारे स्नातक पाठ्यक्रम के पत्र संख्या -V (History of India, 1757-1857. तथा पत्र संख्या-VI. History of India, 1858-1947 (Special Reference To The Freedom Movement) से सम्बन्धित है।

यह पाठ्य-सामग्री निश्चित रूप से आपको इतिहास से संबंधित तारीखों, घटनाओं तथा एक-एक तथ्यों की जानकारी देने के लिए नहीं लिखी जा रही है। अतः संज्ञान रहें कि इसका लाभ आप तभी ले पाएँगे, जब इस विषय से संबंधित पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन करेंगे या कर चुके होंगे।

इस पाठ्य सामग्री के माध्यम से मेरा नितांत उद्देश्य उन्हीं कार्यों या लक्ष्यों की पूर्ति करना है, जिसके लिए शिक्षक और ~~अध्यापक~~ विद्यार्थी कक्षाओं में इकट्ठा होते हैं। हाँलाकि एकदम से वैसी स्थिति नहीं है। क्योंकि यहाँ प्रश्न पूछने वाले विद्यार्थी अनुपस्थित हैं, जिनके द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर ही अध्यापक, अपने विषय के कई महत्वपूर्ण आयामों पर विचार करता हूँ।

3.

इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान की वह मुक-मल समझदारी, जिससे भविष्य-निर्माण को दिशा मिले, अतीत के अध्ययन से ही सम्भव है।

अब हालाँकि अतीत को कालखण्डों में बाँटना बहुत प्रमाणिक बात नहीं है, लेकिन अध्ययन की सुविधा के लिए ऐसा किया जाता रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति (1945ई०) तक पूरे विश्व के इतिहास को आमतौर पे तीन भागों में बाँटकर पढ़ने की परम्परा रही। ① प्राचीन काल ② मध्यकाल तथा ③ आधुनिक काल।

ऊपर हमने जिन दो पेपरों (V और VI) का उल्लेख किया है, उसका सम्बन्ध आधुनिक भारतीय इतिहास से है।

भारतीय इतिहास के काल विभाजन का संक्षिप्त परिचय:- भारतीय इतिहास का सर्वप्रथम काल-विभाजन ब्रिटिश इतिहासकार जेम्स मिल ने किया। सन 1817 ईसवी में प्रकाशित 'हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया' पुस्तक में पहली बार उसने भारतीय इतिहास को तीन कालखंडों ① हिन्दू काल, ② मुस्लिम काल तथा ③ ब्रिटिश काल में बाँटा। भारतीय इतिहास का यह काल विभाजन शासक के धर्म को ध्यान में रखकर साम्प्रदायिक आधार पर किया गया था, जिसका बाद के भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने जमकर मुखालफ़त की।

बाद के राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने मिल के साम्प्रदायिक काल विभाजन का शख्ती से नकारा और भारतीय इतिहास को प्राचीनकाल, मध्यकाल तथा आधुनिककाल में बाँटकर अध्ययन करना शुरु किया। आरम्भ से लेकर दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व तक के काल को प्राचीन काल, दिल्ली सल्तनत की स्थापन से लेकर मुगलवंश के अंतिम शक्तिशाली बादशाह औरंगजेब की मृत्यु तक के समय को मध्यकाल तथा भारत में ब्रिटिश हुकूमत के हस्तक्षेपों के आरम्भ से लेकर भारत की स्वतन्त्रता के समय तक को आधुनिक काल माना गया।

पहले यह बात कही जा चुकी है कि इतिहास का कोई काल-विभाजन दोष-रहित या नितांत प्रमाणिक नहीं है। यह केवल अध्ययन की सुविधा के लिए काल-खण्डों की कुछ प्रमुख विशेषताओं और प्रवृतियों के आधार पर किया जाता है। अब अगली कक्षा में आपलोगों से जानने की अपेक्षा रखता हूँ कि किन प्रवृतियों, विशेषताओं या लक्षणों के कारण भारतीय इतिहास के एक काल-खण्ड को 'आधुनिक काल' कहा गया।